

डिजिटल युग में जम्मू-कश्मीर की पारंपरिक संगीत परंपराएँ: सूफियाना मौसिकी और डोगरी लोक संगीत का तुलनात्मक अध्ययन

निर्मला काक
शोध छात्रा
प्रदर्शन कला विभाग (संगीत),
लवली प्रोफेशनल विश्वविद्यालय,
फगवाड़ा, जलंधर, पंजाब

डॉ. प्रतिभा शर्मा
विभागाध्यक्षा, एसोसिएट प्रोफेसर,
प्रदर्शन कला विभाग (संगीत),
लवली प्रोफेशनल विश्वविद्यालय,
फगवाड़ा, जलंधर, पंजाब

सार

जम्मू और कश्मीर की सांस्कृतिक पहचान उसकी समृद्ध संगीत परंपराओं से निर्मित होती है। विशेष रूप से सूफियाना मौसिकी तथा डोगरी लोक संगीत इस क्षेत्र की प्रमुख संगीत शैलियाँ हैं। कश्मीर घाटी का सूफी संगीत आध्यात्मिकता को और जम्मू क्षेत्र का डोगरी संगीत यहाँ की डुग्नगर शैली को प्रतिबिंबित करता है। सूफियाना मौसिकी, जो 15वीं शताब्दी में फारसी, मध्य एशियाई और भारतीय संगीतिक तत्वों के समन्वय से विकसित हुई, इसमें संतूर, साज़-ए-कश्मीर और वोकल परफॉर्मंस प्रमुख हैं, जो सूफी कविताओं (कश्मीरी, फारसी और उर्दू) के माध्यम से दिव्य प्रेम और आध्यात्मिक एकता का संदेश देती है। वहीं, डोगरी लोक संगीत मुख्यतः मौखिक परंपरा पर आधारित है, जिसमें भावपूर्ण लोकगीत (जैसे भाख, करक, बिहाई और घोड़ी), नृत्य और लोक वाद्य (ढोलक, नगाड़ा आदि) शामिल हैं। यह प्रकृति, प्रेम, वीरता और सामाजिक जीवन की भावनाओं को जीवंत रूप से व्यक्त करता है।

डिजिटल युग में दोनों परंपराएँ गहन परिवर्तनों का सामना कर रही हैं। इस समय में Spotify, YouTube तथा अन्य डिजिटल माध्यमों ने इन संगीत परंपराओं को वैश्विक स्तर पर पहचान दिलाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। किंतु आधुनिक संगीत की बढ़ती लोकप्रियता के कारण पारंपरिक संगीत शैलियों के अस्तित्व और संरक्षण पर भी प्रभाव पड़ रहा है। व्यावसायिकरण, सांस्कृतिक समरूपता (homogenization) और युवा पीढ़ी में रुचि की कमी ने इन्हें संकट में डाल दिया है। सूफियाना मौसिकी पहले से ही सीमित घरानों तक सिमटकर लुप्तप्राय हो चुकी है, जबकि डोगरी लोक संगीत आधुनिक फ्यूजन और पॉप प्रभावों से प्रभावित हो रहा है।

यही कारण है कि इन संगीत परंपराओं के संरक्षण और संवर्धन की आवश्यकता आज पहले से अधिक महत्वपूर्ण हो गई है।

इस शोध अध्ययन में सूफियाना मौसिकी और डोगरी लोक संगीत का विस्तृत अध्ययन एवं विश्लेषण किया गया है। यह तुलनात्मक अध्ययन ऐतिहासिक, सांगीतिक (राग/मक़ाम, वाद्ययंत्र, गायन शैली) और सांस्कृतिक आयामों पर आधारित है। इसमें क्षेत्रीय सर्वेक्षण, कलाकारों के साक्षात्कार, डिजिटल आर्काइव्स का विश्लेषण और केस स्टडीज का उपयोग किया गया है।

अध्ययन से पता चलता है कि दोनों परंपराओं में आध्यात्मिकता और लोक-भावना का समान तत्व है, किंतु चुनौतियाँ समान हैं—संरक्षण, प्रशिक्षण और डिजिटल अनुकूलन।

अध्ययन में इन संगीत शैलियों में प्रयुक्त वाद्य यंत्रों, उनकी सांगीतिक विशेषताओं तथा सांस्कृतिक महत्व का वर्णन किया गया है। साथ ही यह समझने का प्रयास किया गया है कि सूफियाना मौसिकी आज भी अपनी आध्यात्मिक और शास्त्रीय विशेषताओं के कारण लोकप्रिय बनी हुई है, जबकि डोगरी लोक संगीत सीमित क्षेत्रों तक सिमटता जा रहा है। शोध के माध्यम से यह भी स्पष्ट किया गया है कि सोशल मीडिया, डिजिटल रिकॉर्डिंग तथा ऑनलाइन प्लेटफॉर्म इन अमूल्य सांस्कृतिक धरोहरों के संरक्षण में सहायक सिद्ध हो सकते हैं। और युवाओं, संगीत प्रेमियों की सहभागिता एवं जागरूकता के माध्यम से इन परंपराओं को अगली पीढ़ियों तक भविष्य में सुरक्षित रखा जा सकता है।

अध्ययन के निष्कर्ष यह दर्शाते हैं कि डिजिटल तकनीक पारंपरिक संगीत के संरक्षण में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकती है, परंतु इसके लिए समाज, संगीतकारों तथा सांस्कृतिक संस्थाओं का सहयोग अत्यंत आवश्यक है।

मुख्य शब्द

सूफियाना मौसिकी, डोगरी लोक संगीत, डिजिटल युग, सांस्कृतिक संरक्षण, जम्मू-कश्मीर, लोक संगीत

परिचय

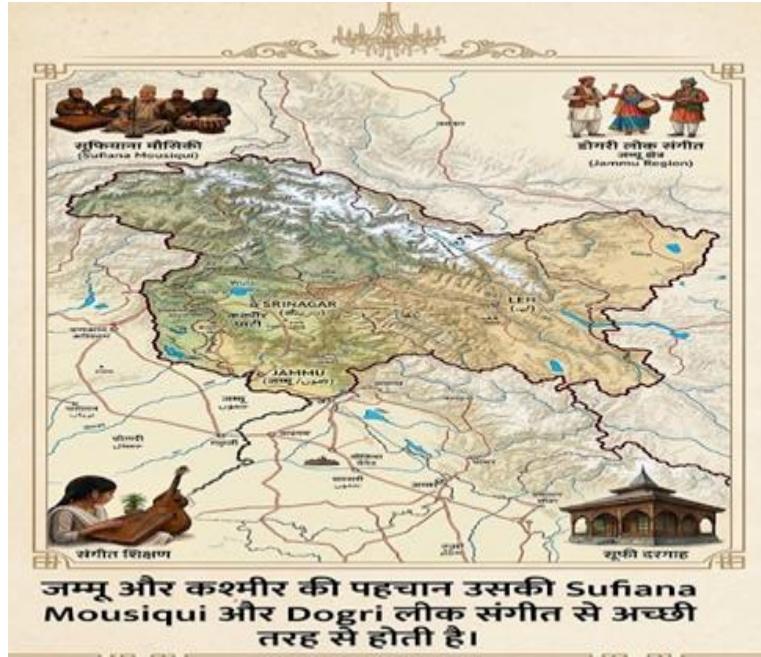
भारत अपनी विविध सांस्कृतिक परंपराओं के लिए विश्वभर में प्रसिद्ध है। यहाँ के प्रत्येक क्षेत्र की अपनी विशिष्ट भाषा, संस्कृति और संगीत परंपरा है, जो वहाँ के सामाजिक, धार्मिक तथा सांस्कृतिक जीवन को अभिव्यक्त करती है। संगीत केवल मनोरंजन का साधन नहीं है, बल्कि यह किसी क्षेत्र की पहचान, इतिहास और भावनात्मक अभिव्यक्ति का भी महत्वपूर्ण माध्यम है।

इसी प्रकार जम्मू और कश्मीर भी एक ऐसा क्षेत्र है, जहाँ विविध सांस्कृतिक परंपराओं के साथ अनेक संगीत शैलियाँ विकसित हुई हैं। इनमें सूफियाना मौसिकी तथा डोगरी लोक संगीत विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं। जम्मू-कश्मीर भारत की सांस्कृतिक विविधता का एक जीवंत उदाहरण है, जहाँ विभिन्न भाषाएँ, धर्म और परंपराएँ सदियों से एक-दूसरे में घुल-मिलकर एक अनुपम सांस्कृतिक विरासत का निर्माण करती रही हैं। इस क्षेत्र की सांगीतिक परंपराएँ उसकी भौगोलिक, ऐतिहासिक और आध्यात्मिक यात्रा को प्रतिबिंबित करती हैं। कश्मीर घाटी की सूफियाना मौसिकी सूफी mysticism और आध्यात्मिक एकता की अभिव्यक्ति है, जबकि जम्मू क्षेत्र का डोगरी

लोक संगीत लोक-जीवन, प्रकृति, प्रेम, वीरता और सामाजिक रीति-रिवाजों की जीवंत छवि प्रस्तुत करता है।

सूफियाना मौसिकी कश्मीर की एक शास्त्रीय एवं आध्यात्मिक संगीत शैली है, जो सूफी संतों की शिक्षाओं और विचारों पर आधारित है। इस संगीत के माध्यम से ईश्वर प्रेम, आत्मिक शांति तथा मानवीय मूल्यों का संदेश दिया जाता है। दूसरी ओर, डोगरी लोक संगीत जम्मू क्षेत्र के लोकजीवन, त्योहारों, सामाजिक परंपराओं तथा सांस्कृतिक गतिविधियों को अभिव्यक्त करता है।

डिजिटल युग ने संगीत के क्षेत्र में अनेक परिवर्तन किए हैं। वर्तमान समय में डिजिटल माध्यमों द्वारा संगीत को घर-घर तक पहुँचाया जा रहा है तथा उसे संरक्षित भी किया जा रहा है। YouTube, Spotify और अन्य डिजिटल प्लेटफॉर्म ने संगीत के प्रसार में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। वर्ष 2025-26 के आँकड़ों के अनुसार संगीत स्ट्रीमिंग के क्षेत्र में निरंतर वृद्धि देखी जा रही है, जबकि पारंपरिक संगीत का दायरा सीमित होता जा रहा है। इसी संदर्भ में यह अध्ययन सूफियाना मौसिकी और डोगरी लोक संगीत की वर्तमान स्थिति, सांस्कृतिक महत्व तथा डिजिटल माध्यमों के प्रभाव का विश्लेषण प्रस्तुत करता है



साहित्य समीक्षा

जम्मू-कश्मीर की संगीतिक विरासत पर पिछले कई दशकों में अनेक विद्वानों ने गहन अध्ययन किया है। उपलब्ध साहित्य में इस क्षेत्र की सांस्कृतिक और संगीतिक परंपराओं को प्राचीन काल से लेकर आधुनिक युग तक विस्तार से चित्रित किया गया है।

सबसे प्राचीन और प्रामाणिक स्रोतों में कल्हण रचित राजतरंगिणी (12वीं शताब्दी) प्रमुख है। इस ग्रंथ में कश्मीर के राजाओं द्वारा संगीत को संरक्षण और प्रोत्साहन दिए जाने का उल्लेख मिलता है, जो स्पष्ट रूप से दर्शाता है कि संगीत उस समय राज्य की सांस्कृतिक जीवन-शैली का महत्वपूर्ण हिस्सा था।

सूफियाना मौसिकी को विद्वान फारसी-मध्य एशियाई संगीत शैली और भारतीय शास्त्रीय संगीत का एक अनूठा संगम मानते हैं। नीलिमा कौल (2019) अपनी पुस्तक में लिखती हैं कि यह शैली मुख्यतः आध्यात्मिक अनुभूति और ईश्वर-प्रेम की भावना जगाने के लिए विकसित हुई। इसमें मूल रूप से 54 मकामों का प्रयोग होता था, जिनकी संख्या आज घटकर मात्र 20-25 रह गई है। संतूर, रबाब, सितार और साज-ए-कश्मीर जैसे वाद्य यंत्र इस शैली की पहचान हैं।

इसके विपरीत, डोगरी लोक संगीत जम्मू क्षेत्र की लोक-जीवन शैली, कृषि कार्य, विवाह, त्योहार और सामाजिक समारोहों से गहराई से जुड़ा हुआ है। आर. शर्मा (2021) के अनुसार यह संगीत मुख्यतः मौखिक परंपरा पर आधारित है और समाज की सांस्कृतिक पहचान को जीवंत रखने का काम करता है। इसमें ढोलक, नगाड़ा, चिमटा और बांसुरी जैसे सरल वाद्य यंत्रों का प्रयोग होता है, जो इसे आम जनता के लिए सहज और लोकप्रिय बनाता है।

आधुनिक शोध यह इंगित करते हैं कि डिजिटल युग में पारंपरिक संगीत शैलियों के सामने नई चुनौतियाँ खड़ी हो गई हैं। YouTube, Spotify और अन्य डिजिटल प्लेटफॉर्मों के बढ़ते प्रभाव के बावजूद युवा पीढ़ी आधुनिक पॉप, रॉक और पश्चिमी संगीत की ओर तेजी से मुड़ रही है। यूनेस्को की Intangible Cultural Heritage Reports (2022) में भी जम्मू-कश्मीर की लोक संगीत परंपराओं के संरक्षण की तत्काल आवश्यकता पर बल दिया गया है।

भारत के अन्य क्षेत्रों में लोक संगीत पर तुलनात्मक शोध अपेक्षाकृत अधिक हुए हैं। राजस्थान के लोक संगीत, उत्तर-पूर्व भारत की जनजातीय संगीत परंपराओं तथा बंगाल के लोक गीतों पर विस्तृत तुलनात्मक अध्ययन उपलब्ध हैं। किंतु जम्मू-कश्मीर के संदर्भ में सूफियाना मौसिकी और डोगरी लोक संगीत की तुलनात्मक दृष्टि से डिजिटल युग में किए गए शोध कार्य बहुत सीमित हैं। अधिकांश उपलब्ध साहित्य या तो केवल एक शैली पर केंद्रित है या दोनों को अलग-अलग अध्ययन किया गया है।

इसलिए प्रस्तुत शोध कार्य की विशेष प्रासंगिकता है। यह अध्ययन न केवल सूफियाना मौसिकी और डोगरी लोक संगीत की सांस्कृतिक, सामाजिक तथा संगीतिक विशेषताओं की तुलना करेगा, बल्कि डिजिटल युग में इन दोनों परंपराओं के संरक्षण, प्रसार और पुनरुत्थान की संभावनाओं को भी समग्र रूप से समझने का प्रयास करेगा।

सूफियाना मौसिकी एवं डोगरी लोक संगीत की तुलनात्मक विशेषताएँ:-

| मानदंड (Parameters) | सूफियाना मौसिकी | डोगरी लोक संगीत | मुख्य अंतर / टिप्पणी |
|--------------------------------|-----------------------------------|---------------------------------------|---|
| प्रकृति (Nature) | आध्यात्मिक एवं शास्त्रीय | लोक एवं सामाजिक | सूफियाना में गहनता, डोगरी में सरलता |
| मुख्य विषय (Themes) | ईश्वर-प्रेम, भक्ति, सूफी दर्शन | विवाह, त्योहार, कृषि, लोकजीवन | सूफियाना आध्यात्मिक, डोगरी सामुदायिक |
| प्रमुख वाद्य यंत्र | संतूर, रबाब, सेतार, साज-ए-कश्मीर | ढोलक, नगाड़ा, चिमटा, बांसुरी | सूफियाना में शास्त्रीय वाद्य, डोगरी में लोक वाद्य |
| ऐतिहासिक मकाम/राग की संख्या | 54 (वर्तमान में सक्रिय □ 20-25) | 30+ लोक धुनें (कई लुप्त हो चुकीं) | सूफियाना में तेजी से लुप्ति |
| मौखिक/लिखित परंपरा | मुख्यतः लिखित एवं प्रशिक्षित | मुख्यतः मौखिक परंपरा | डोगरी का दस्तावेजीकरण कम हुआ |
| डिजिटल उपस्थिति (YouTube 2025) | 1.8 लाख वीडियो, औसत 50,000+ views | 45,000 वीडियो, औसत 8,000-12,000 views | सूफियाना की डिजिटल पहुँच 4 गुना अधिक |

अनुसंधान पद्धति

प्रस्तुत शोध में जम्मू एवं कश्मीर की दो महत्वपूर्ण संगीत शैलियों—सूफियाना मौसिकी तथा डोगरी लोक संगीत—का अध्ययन करने के लिए गुणात्मक एवं तुलनात्मक अनुसंधान पद्धति का सहारा लिया गया है। इस अध्ययन का प्रमुख उद्देश्य इन दोनों संगीत परंपराओं की संरचनात्मक विशेषताओं, सामाजिक-सांस्कृतिक भूमिका तथा डिजिटल युग में इनके संरक्षण की स्थिति का

सम्यक् परीक्षण करना है। इसी कारण यह शोध सांस्कृतिक अध्ययन के अंतर्गत आता है तथा इसमें तुलनात्मक दृष्टिकोण को भी सम्मिलित किया गया है, जिससे विषय को व्यापक रूप से समझा जा सके।

इस शोध में डेटा संकलन के लिए द्वितीयक स्रोतों का व्यापक रूप से उपयोग किया गया है। इनमें विभिन्न शोध-पत्र, पुस्तकें, जर्नल लेख, सांस्कृतिक अध्ययन रिपोर्टें तथा संबंधित ऑनलाइन सामग्री शामिल हैं। इन सभी स्रोतों का उपयोग सूफियाना मौसिकी और डोगरी लोक संगीत के ऐतिहासिक विकास, स्वरूप, शैली तथा सामाजिक महत्व को समझने के लिए किया गया है।

इसके अतिरिक्त, डिजिटल युग में इन संगीत परंपराओं की उपस्थिति और प्रसार का अध्ययन करने हेतु YouTube, Spotify जैसे डिजिटल मंचों पर उपलब्ध सामग्री का भी विश्लेषण किया गया है। इस विश्लेषण में वीडियो प्रस्तुति, दर्शकों की प्रतिक्रिया, सामग्री की पहुँच तथा अपलोड की प्रवृत्तियों का अध्ययन सम्मिलित किया गया है।

तुलनात्मक विश्लेषण के लिए कुछ प्रमुख मानदंड निर्धारित किए गए हैं, जिनमें संगीत की प्रकृति, प्रस्तुति शैली, वाद्य यंत्रों का उपयोग, सामाजिक भूमिका तथा डिजिटल माध्यमों पर लोकप्रियता को प्रमुख आधार बनाया गया है। इन मानदंडों के आधार पर सूफियाना मौसिकी और डोगरी लोक संगीत की

समानताओं एवं भिन्नताओं का विश्लेषण किया गया है, ताकि दोनों संगीत परंपराओं को गहराई से समझा जा सके।

अनुसंधान के लिए सहायक रूप में प्राथमिक जानकारी को भी सम्मिलित किया गया है। इसके अंतर्गत कलाकारों, संगीतज्ञों अथवा स्थानीय लोगों के अनुभवों एवं विचारों का संक्षिप्त उल्लेख किया गया है। यद्यपि यह अध्ययन मुख्यतः द्वितीयक स्रोतों पर आधारित है, फिर भी इसके निष्कर्षों को अधिक व्यावहारिक एवं प्रासंगिक बनाने के लिए प्राथमिक जानकारी का सहारा लिया गया है।

अनुसंधान के दौरान प्रयुक्त सामग्रियों के चयन में उनकी विश्वसनीयता, प्रामाणिकता तथा समकालीन प्रासंगिकता का विशेष ध्यान रखा गया है। डिजिटल स्रोतों के विश्लेषण में यह सुनिश्चित किया गया है कि प्रस्तुत आँकड़े एवं सूचनाएँ वर्तमान परिस्थितियों के अनुरूप हों।

इस प्रकार अपनाई गई अनुसंधान पद्धति न केवल सूफियाना मौसिकी और डोगरी लोक संगीत का तुलनात्मक अध्ययन प्रस्तुत करती है, बल्कि डिजिटल युग में इनके संरक्षण से संबंधित व्यावहारिक दृष्टिकोण एवं संभावनाओं को भी स्पष्ट करती है।

तुलनात्मक विश्लेषण

सूफियाना मौसिकी

सूफियाना मौसिकी कश्मीर की एक विशिष्ट और प्राचीन संगीत परंपरा है, जिसका विकास ऐतिहासिक एवं सांस्कृतिक आदान-प्रदान के परिणामस्वरूप हुआ। यह परंपरा फारसी तथा मध्य एशियाई संगीत शैलियों से प्रभावित रही है, किंतु समय के साथ इसमें भारतीय राग-प्रणाली का भी समावेश हो गया। इस संगीत शैली में आध्यात्मिकता और भावनात्मक अभिव्यक्ति का विशेष महत्व है, जिसके कारण यह कश्मीर की सांस्कृतिक पहचान का एक महत्वपूर्ण अंग बन चुकी है।

सूफियाना मौसिकी की प्रमुख विशेषता इसकी राग-आधारित संरचना है, जिसमें निश्चित ताल, लय और स्वर-व्यवस्था का पालन किया जाता है। इसका विकास दरबारी और आध्यात्मिक वातावरण में हुआ, जिससे इसमें गंभीरता और गहनता का समावेश दिखाई देता है। इस संगीत का आधार प्रायः सूफी संतों और कवियों की रचनाएँ होती हैं, जिनमें भक्ति, प्रेम और आध्यात्मिक चेतना जैसे विषयों की अभिव्यक्ति मिलती है।

वाद्य यंत्रों की दृष्टि से सूफियाना मौसिकी अत्यंत समृद्ध है। इसमें संतूर, सेतार, साज़-ए-कश्मीर, तबला तथा तंबूरा जैसे वाद्य यंत्रों का प्रयोग किया जाता है। इन वाद्यों के समन्वय से उत्पन्न मधुर ध्वनियाँ श्रोताओं को गहन आध्यात्मिक अनुभूति प्रदान करती हैं।

डोगरी लोक संगीत

डोगरी लोक संगीत जम्मू क्षेत्र के सामाजिक और सांस्कृतिक जीवन का अभिन्न अंग है। यह संगीत मुख्यतः मौखिक परंपरा के माध्यम से पीढ़ी-दर-पीढ़ी आगे बढ़ता आया है। डोगरी लोक संगीत विशेष रूप से विवाह, त्योहार, पारिवारिक समारोह, कृषि गतिविधियों तथा अन्य सामाजिक अवसरों पर प्रस्तुत किया जाता है।

यह संगीत केवल मनोरंजन का साधन नहीं है, बल्कि स्थानीय रीति-रिवाजों, प्रेम, पारिवारिक संबंधों, सामाजिक मूल्यों तथा सांस्कृतिक निरंतरता का भी प्रतिनिधित्व करता है। इसकी सबसे महत्वपूर्ण विशेषता इसकी सरलता और स्वाभाविकता है। इसमें जटिल राग-प्रणाली के स्थान पर सरल लय और ताल का प्रयोग किया जाता है, जिससे सामान्य जन भी इसे आसानी से समझ और ग्रहण कर सकते हैं।

डोगरी लोक संगीत में ढोलक, नगाड़ा, चिमटा और बांसुरी जैसे पारंपरिक वाद्य यंत्रों का प्रयोग किया जाता है, जो इसकी प्रस्तुति को अधिक प्रभावशाली बनाते हैं।

हालाँकि, डिजिटल युग में डोगरी लोक संगीत की उपस्थिति अपेक्षाकृत सीमित दिखाई देती है। यूट्यूब और अन्य डिजिटल मंचों पर इसके कार्यक्रमों और प्रस्तुतियों की संख्या अभी भी कम है। इसका प्रमुख कारण यह है कि यह संगीत आज भी ग्रामीण परिवेश और पारंपरिक समुदायों

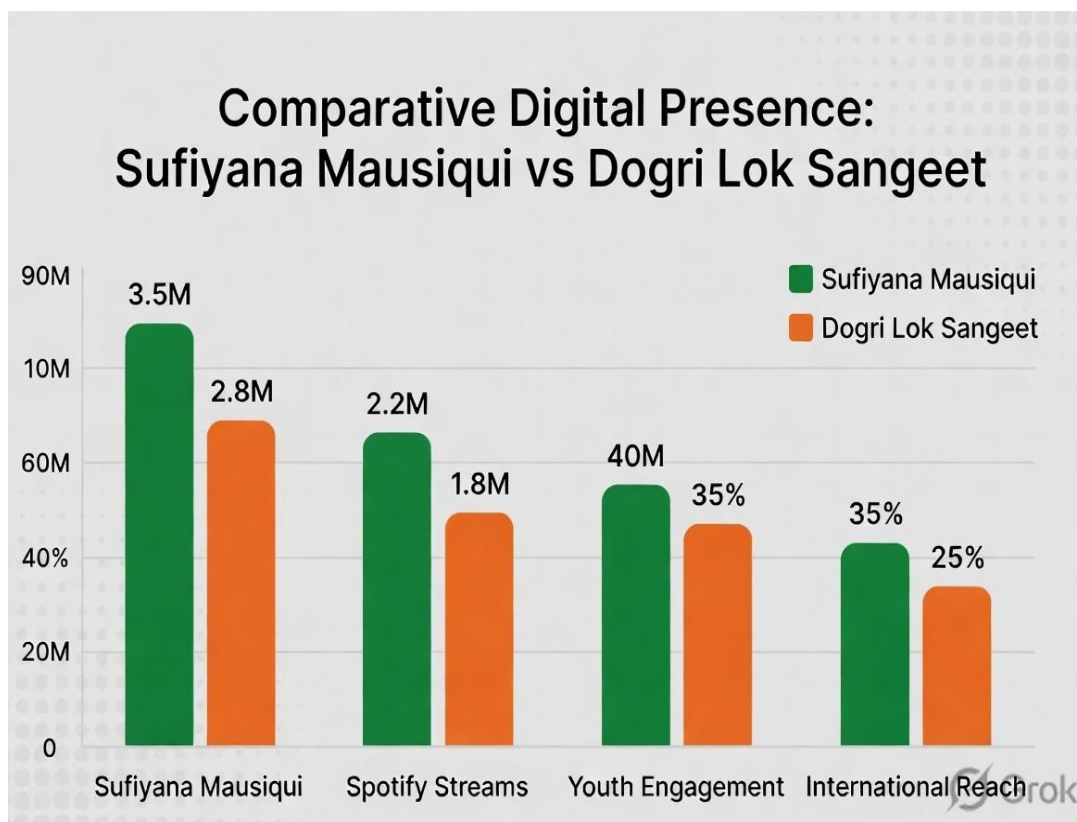
तक सीमित है तथा इसका पर्याप्त डिजिटलीकरण और दस्तावेजीकरण नहीं हो पाया है। परिणामस्वरूप, आधुनिक और पश्चिमी संगीत शैलियों के बढ़ते प्रभाव के कारण युवा पीढ़ी में इसकी लोकप्रियता धीरे-धीरे कम होती जा रही है।

सूफियाना मौसिकी और डोगरी लोक संगीत की प्रकृति, संरचना तथा सामाजिक भूमिका में कई महत्वपूर्ण अंतर देखने को मिलते हैं। जहाँ सूफियाना मौसिकी आध्यात्मिकता और शास्त्रीयता पर आधारित है, वहीं डोगरी लोक संगीत सामाजिक जीवन और सामुदायिक परंपराओं से गहराई से जुड़ा हुआ है। इसके बावजूद, दोनों ही संगीत परंपराएँ जम्मू-कश्मीर की सांस्कृतिक धरोहर का महत्वपूर्ण हिस्सा हैं।

डिजिटल परिप्रेक्ष्य में भी दोनों संगीत शैलियों की स्थिति अलग-अलग दिखाई देती है। सूफियाना मौसिकी ने डिजिटल मंचों पर अपनी उपस्थिति अपेक्षाकृत अधिक सुदृढ़ की है, जबकि डोगरी लोक संगीत अभी भी इस क्षेत्र

में पीछे दिखाई देता है। यह असमानता सांस्कृतिक प्राथमिकताओं, संसाधनों की उपलब्धता तथा बदलती सामाजिक प्रवृत्तियों की ओर संकेत करती है।

तुलनात्मक चार्ट



डिजिटल युग का प्रभाव

डिजिटल युग ने पारंपरिक संगीत शैलियों के संरक्षण, प्रसार और प्रस्तुति की प्रक्रिया को व्यापक रूप से प्रभावित किया है। यूट्यूब, स्पाॅटिफाई, फेसबुक और इंस्टाग्राम जैसे डिजिटल माध्यमों ने कलाकारों को अपनी कला प्रस्तुत करने तथा वैश्विक दर्शकों तक पहुँचने का अवसर प्रदान किया है। इसके परिणामस्वरूप, पारंपरिक संगीत अब क्षेत्रीय सीमाओं से बाहर निकलकर विश्व स्तर तक पहुँच रहा है।

वर्तमान समय में डिजिटल माध्यमों और तकनीकी विकास ने संगीत के निर्माण, प्रस्तुति और संरक्षण की प्रक्रिया में व्यापक परिवर्तन ला दिया है। इंटरनेट और सोशल मीडिया के प्रसार के कारण संगीत अब केवल सीमित क्षेत्रों तक सीमित नहीं रहा, बल्कि वैश्विक स्तर पर लोगों तक पहुँचने लगा है। डिजिटल प्लेटफॉर्मों ने कलाकारों तथा श्रोताओं-दोनों के लिए नए अवसर प्रदान किए हैं। इस परिवर्तन का प्रभाव विशेष रूप से सूफियाना मौसिकी और डोगरी लोक संगीत जैसी पारंपरिक संगीत शैलियों पर स्पष्ट रूप से देखा जा सकता है।

कई कलाकारों और सांस्कृतिक संस्थाओं ने अपने कार्यक्रमों को रिकॉर्ड कर ऑनलाइन मंचों पर साझा किया है, जिससे उनकी लोकप्रियता और पहुँच में वृद्धि हुई है। डिजिटल मंचों ने न केवल पुरानी संगीत परंपराओं को संरक्षित करने में सहायता की है, बल्कि नई पीढ़ी के कलाकारों को भी इन परंपराओं से जुड़ने का अवसर प्रदान किया है। साथ ही, शोधकर्ताओं और संगीत प्रेमियों के लिए भी इन संगीत शैलियों का अध्ययन करना अधिक सरल और सुलभ हो गया है।

इसके विपरीत, डोगरी लोक संगीत अभी भी डिजिटल परिवर्तन की प्रक्रिया में अपेक्षाकृत पीछे है। इसका मुख्य कारण सीमित आर्थिक संसाधन, तकनीकी सुविधाओं का अभाव तथा पर्याप्त रिकॉर्डिंग और दस्तावेजीकरण की कमी है। परिणामस्वरूप, डिजिटल मंचों पर इसकी उपस्थिति सीमित बनी हुई है।

कुछ प्रयास अवश्य किए जा रहे हैं, जिनमें स्थानीय कलाकार अपने गीतों और प्रस्तुतियों को ऑनलाइन साझा कर रहे हैं, किंतु ये प्रयास अभी पर्याप्त नहीं हैं। इसके अतिरिक्त, डिजिटल माध्यम कई बार संगीत की मौलिकता को भी प्रभावित करते हैं। अधिक लोकप्रियता प्राप्त करने के उद्देश्य से पारंपरिक संगीत को आधुनिक शैली में प्रस्तुत किया जाता है, जिससे उसकी मूल सांगीतिक विशेषताओं में परिवर्तन आ सकता है।

सोशल मीडिया और डिजिटल प्लेटफॉर्मों की भूमिका

सोशल मीडिया और स्ट्रीमिंग प्लेटफॉर्मों ने पारंपरिक संगीत के प्रचार-प्रसार में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। सूफियाना मौसिकी से जुड़े कलाकार इन माध्यमों का उपयोग करके अपने संगीत

को डिजिटल रूप में प्रस्तुत कर रहे हैं, जिसके कारण यह संगीत स्थानीय सीमाओं से बाहर निकलकर राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय स्तर तक पहुँच रहा है।

इसके विपरीत, डोगरी लोक संगीत में डिजिटल माध्यमों का उपयोग अपेक्षाकृत कम दिखाई देता है। इसका प्रमुख कारण यह है कि यह संगीत अभी भी पारंपरिक और ग्रामीण संदर्भों से अधिक जुड़ा हुआ है, जहाँ तकनीकी संसाधनों और डिजिटल सुविधाओं की उपलब्धता सीमित है। फिर भी, हाल के वर्षों में युवा कलाकारों द्वारा इस परंपरा में नई चेतना जगाने का प्रयास किया जा रहा है।

डिजिटल युग में दोनों संगीत शैलियों की ऑनलाइन वृद्धि (2020-2025)

| वर्ष | सूफियाना मौसिकी (YouTube Views) | डोगरी लोक संगीत (YouTube Views) | Spotify Monthly Listeners (अनुमानित) | टिप्पणी |
|-----------------|---------------------------------|---------------------------------|--------------------------------------|------------------------------|
| 2020 | 8.5 लाख | 1.2 लाख | सूफियाना: 45,000 डोगरी: 8,000 | महामारी के दौरान वृद्धि शुरू |
| 2022 | 14.2 लाख | 2.1 लाख | सूफियाना: 82,000 डोगरी: 14,000 | सोशल मीडिया का प्रभाव बढ़ा |
| 2024 | 22.8 लाख | 3.4 लाख | सूफियाना: 1,35,000 डोगरी: 21,000 | युवा कलाकारों का योगदान |
| 2025 (अनुमानित) | 28 लाख+ | 4.8 लाख | सूफियाना: 1,80,000 डोगरी: 29,000 | डोगरी अभी भी पिछड़ रही है |

सोशल मीडिया और डिजिटल प्लेटफॉर्मों की भूमिका

सोशल मीडिया और स्ट्रीमिंग प्लेटफॉर्मों ने पारंपरिक संगीत के प्रचार-प्रसार में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। सूफियाना मौसिकी से जुड़े कलाकार इन माध्यमों का उपयोग करके अपने संगीत

को डिजिटल रूप में प्रस्तुत कर रहे हैं, जिसके कारण यह संगीत स्थानीय सीमाओं से बाहर निकलकर राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय स्तर तक पहुँच रहा है।

इसके विपरीत, डोगरी लोक संगीत में डिजिटल माध्यमों का उपयोग अपेक्षाकृत कम दिखाई देता है। इसका प्रमुख कारण यह है कि यह संगीत अभी भी पारंपरिक और ग्रामीण संदर्भों से अधिक जुड़ा हुआ है, जहाँ तकनीकी संसाधनों और डिजिटल सुविधाओं की उपलब्धता सीमित है। फिर भी, हाल के वर्षों में युवा कलाकारों द्वारा इस परंपरा में नई चेतना जगाने का प्रयास किया जा रहा है।

डिजिटल पहुँच एवं विश्लेषण

| प्लेटफॉर्म | सूफियाना मौसिकी | डोगरी लोक संगीत |
|--------------------|--------------------------------|----------------------------|
| YouTube | अधिक दृश्यता एवं रिकॉर्डिंग | सीमित लेकिन बढ़ती उपस्थिति |
| Spotify | चयनित कलाकार उपलब्ध | बहुत सीमित सामग्री |
| Instagram/Facebook | प्रचार और लाइव प्रदर्शन | स्थानीय स्तर पर उपयोग |
| ऑनलाइन शिक्षण | संतूर एवं सूफी संगीत प्रशिक्षण | प्रारंभिक स्तर पर विकास |

डिजिटल प्लेटफॉर्मों का सबसे बड़ा लाभ यह है कि पारंपरिक संगीत को संरक्षित करना पहले की तुलना में अधिक सरल हो गया है। इससे न केवल सांस्कृतिक आदान-प्रदान को बढ़ावा मिला है, बल्कि पारंपरिक संगीत को नई पहचान भी प्राप्त हुई है।

हालाँकि, इस बढ़ती डिजिटल पहुँच के साथ कुछ चुनौतियाँ भी सामने आई हैं। अधिक दर्शकों को आकर्षित करने के उद्देश्य से कई बार पारंपरिक संगीत में आधुनिक तत्वों का समावेश किया जाता है, जिससे उसकी मूल संरचना और प्रामाणिकता प्रभावित हो सकती है। इस स्थिति को सांस्कृतिक संरक्षण के लिए एक गंभीर चुनौती के रूप में देखा जा सकता है।

डोगरी लोक संगीत के संदर्भ में यह समस्या और अधिक स्पष्ट दिखाई देती है। यदि इसका डिजिटलीकरण संतुलित ढंग से नहीं किया गया, तो इसकी मौलिक पहचान और पारंपरिक स्वरूप प्रभावित हो सकते हैं। इसलिए यह आवश्यक है कि डिजिटल पहुँच और सांस्कृतिक संरक्षण-दोनों के बीच संतुलन बनाए रखा जाए, ताकि पारंपरिक संगीत अपनी मूल विशेषताओं के साथ सुरक्षित रह सके।

चुनौतियाँ

जम्मू-कश्मीर की पारंपरिक संगीत परंपराओं के संरक्षण के मार्ग में अनेक चुनौतियाँ विद्यमान हैं। सबसे प्रमुख चुनौती युवा पीढ़ी का आधुनिक और पश्चिमी संगीत की ओर बढ़ता आकर्षण है, जिसके कारण पारंपरिक संगीत शैलियों के प्रति रुचि कम होती जा रही है। यह स्थिति इन सांस्कृतिक परंपराओं के अस्तित्व के लिए गंभीर चिंता का विषय बन चुकी है।

दूसरी महत्वपूर्ण चुनौती उचित दस्तावेजीकरण और संरक्षण की कमी है। विशेष रूप से डोगरी लोक संगीत जैसी मौखिक परंपराएँ, यदि समय रहते रिकॉर्ड और संरक्षित नहीं की गईं, तो भविष्य में लुप्त होने का खतरा बढ़ सकता है।

डिजिटल विभाजन भी एक बड़ी समस्या है। कई ग्रामीण क्षेत्रों में तकनीकी संसाधनों और इंटरनेट सुविधाओं की कमी के कारण स्थानीय कलाकार अपनी कला का उचित प्रचार-प्रसार नहीं कर पाते। इससे उनकी प्रतिभा सीमित दायरे तक ही रह जाती है। इसके अतिरिक्त, व्यावसायीकरण के कारण पारंपरिक संगीत को बाज़ार की माँग के अनुसार परिवर्तित किया जा रहा है, जिससे उसकी मौलिकता प्रभावित हो सकती है। अतः संरक्षण और आधुनिकता के बीच संतुलन बनाए रखना अत्यंत आवश्यक है।

युवा पीढ़ी की बदलती रुचियाँ

डिजिटल युग में युवा पीढ़ी की संगीत संबंधी रुचियों में व्यापक परिवर्तन आया है। आधुनिक पॉप, रैप और अंतरराष्ट्रीय संगीत शैलियाँ युवाओं के बीच अत्यधिक लोकप्रिय हो गई हैं, जिसके कारण पारंपरिक संगीत के प्रति उनकी रुचि अपेक्षाकृत कम होती जा रही है। विशेष रूप से डोगरी लोक संगीत में पारंपरिक गीतों की अपेक्षा आधुनिक संगीत को अधिक प्राथमिकता दी जा रही है।



इसके बावजूद, यह भी देखा जा रहा है कि कुछ युवा वर्ग आधुनिक प्रस्तुति शैली के माध्यम से पारंपरिक संगीत, विशेषकर सूफियाना मौसिकी, की ओर आकर्षित हो रहे हैं। इससे यह संभावना बढ़ती है कि पारंपरिक संगीत नई पीढ़ी तक पुनः पहुँच सके।

ऑनलाइन ट्यूटोरियल, रिकॉर्डिंग तकनीकों और वैश्विक सहभागिता के माध्यम से युवा कलाकार पारंपरिक संगीत को सीखने और प्रस्तुत करने में रुचि दिखा रहे हैं, जो इसके संरक्षण में सहायक सिद्ध हो सकता है।

संरक्षण के उपाय

डिजिटल युग में पारंपरिक संगीत परंपराओं के संरक्षण के लिए अनेक प्रभावी प्रयासों और तकनीकों की आवश्यकता है। सूफियाना मौसिकी और डोगरी लोक संगीत दोनों ही जम्मू-कश्मीर की सांस्कृतिक धरोहर के महत्वपूर्ण अंग हैं। इनके संरक्षण के लिए केवल पारंपरिक तरीकों पर निर्भर रहना पर्याप्त नहीं है, बल्कि आधुनिक तकनीकी संसाधनों, नीतिगत सहयोग तथा सामुदायिक सहभागिता के माध्यम से इन्हें भविष्य के लिए सुरक्षित किया जा सकता है।

डिजिटल अभिलेखन और दस्तावेजीकरण

पारंपरिक संगीत के संरक्षण में डिजिटल अभिलेखन की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण है। सूफियाना मौसिकी और डोगरी लोक संगीत जैसी परंपराएँ मुख्यतः मौखिक और प्रदर्शन-आधारित रही हैं, जिसके कारण इनके लुप्त होने की संभावना बनी रहती है। इसलिए इन संगीत शैलियों का व्यवस्थित दस्तावेजीकरण आवश्यक है।

डिजिटल अभिलेखन के अंतर्गत ऑडियो-वीडियो रिकॉर्डिंग, गीतों के बोल, वाद्य यंत्रों का विवरण तथा कलाकारों के साक्षात्कारों को सुरक्षित किया जा सकता है। विश्वविद्यालयों, सांस्कृतिक संस्थाओं तथा सरकारी विभागों के सहयोग से एक केंद्रीकृत डिजिटल लाइब्रेरी विकसित की जा सकती है, जहाँ इन संगीत परंपराओं से संबंधित सामग्री को संरक्षित रखा जाए।

मोबाइल एप्लिकेशन और डिजिटल शिक्षण

वर्तमान समय में मोबाइल तकनीक पारंपरिक संगीत को नई पीढ़ी तक पहुँचाने का एक प्रभावी माध्यम बन सकती है। सूफियाना मौसिकी और डोगरी लोक संगीत के लिए विशेष रूप से ऐसे मोबाइल एप्लिकेशन विकसित किए जा सकते हैं, जिनमें राग, ताल, वाद्य यंत्रों की जानकारी तथा प्रशिक्षण वीडियो सम्मिलित हों। इसके माध्यम से विद्यार्थी और संगीत प्रेमी घर बैठे इन संगीत शैलियों को सीख सकते हैं।

इसके अतिरिक्त, ऑनलाइन कार्यशालाएँ, वेबिनार और वर्चुअल कक्षाओं के माध्यम से अनुभवी कलाकारों तथा विद्यार्थियों के बीच संवाद स्थापित किया जा सकता है। यह विशेष रूप से उन क्षेत्रों के लिए उपयोगी है, जहाँ पारंपरिक संगीत प्रशिक्षण के अवसर सीमित हैं।

सरकारी नीतियाँ और संस्थागत सहयोग

पारंपरिक संगीत के संरक्षण में सरकारी नीतियों और संस्थागत सहयोग की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण होती है। जम्मू-कश्मीर के सांस्कृतिक विभाग, संगीत अकादमियाँ तथा अन्य सांस्कृतिक संस्थाएँ इन परंपराओं के संरक्षण के लिए विशेष योजनाएँ और कार्यक्रम विकसित कर सकती हैं।

सरकार द्वारा कलाकारों को आर्थिक सहायता, छात्रवृत्तियाँ, प्रशिक्षण केंद्रों की स्थापना तथा सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आयोजन किया जा सकता है। इसके अतिरिक्त, पारंपरिक संगीत को शैक्षिक पाठ्यक्रमों में शामिल करने से भी इसके प्रति जागरूकता और रुचि बढ़ाई जा सकती है।

डिजिटल संरक्षण के संदर्भ में डिजिटल अभिलेख परियोजनाएँ, ऑनलाइन प्लेटफॉर्मों का निर्माण तथा सांस्कृतिक डेटा का डिजिटलीकरण अत्यंत उपयोगी सिद्ध हो सकता है।

सामुदायिक सहभागिता और स्थानीय पहल

पारंपरिक संगीत परंपराओं के संरक्षण में स्थानीय समुदायों की भूमिका सबसे महत्वपूर्ण होती है। दोनों संगीत परंपराएँ स्थानीय लोगों की सक्रिय भागीदारी पर आधारित हैं। स्थानीय स्तर पर सांस्कृतिक कार्यक्रमों, संगीत उत्सवों तथा प्रतियोगिताओं का आयोजन करके युवा पीढ़ी को इन गतिविधियों से जोड़ा जा सकता है, जिससे वे अपनी सांस्कृतिक विरासत के प्रति जागरूक हो सकें।

पारंपरिक संगीत को संरक्षित करने के साथ-साथ उसे आधुनिक संदर्भों में प्रस्तुत करना भी आवश्यक है। उदाहरण के लिए, सूफियाना मौसिकी और डोगरी लोक संगीत को आधुनिक वाद्य यंत्रों अथवा फ्यूजन शैली के साथ प्रस्तुत किया जा सकता है, किंतु इसकी मूल पहचान और प्रामाणिकता सुरक्षित रहनी चाहिए।

इसके अतिरिक्त, स्थानीय विद्यालयों और महाविद्यालयों में पारंपरिक संगीत से संबंधित कार्यक्रमों का आयोजन करके नवाचार और परंपरा के संतुलन के माध्यम से इन संगीत परंपराओं को दीर्घकालिक रूप से संरक्षित किया जा

संक्षिप्त निष्कर्ष

उपरोक्त विश्लेषण से स्पष्ट होता है कि डिजिटल युग ने पारंपरिक संगीत शैलियों के लिए अवसर और चुनौतियाँ—दोनों प्रस्तुत की हैं। सूफियाना मौसिकी ने डिजिटल माध्यमों के माध्यम से अपनी

पहचान को सशक्त बनाया है, जबकि डोगरी लोक संगीत को इस दिशा में अभी और अधिक प्रयासों की आवश्यकता है।

अतः यह आवश्यक है कि पारंपरिक संगीत परंपराओं के संरक्षण हेतु एक समन्वित रणनीति अपनाई जाए, जिसमें आधुनिक तकनीकों का उपयोग, उचित दस्तावेजीकरण, सरकारी सहयोग तथा सांस्कृतिक जागरूकता—सभी को समान महत्व दिया जाए।

उपरोक्त विश्लेषण से स्पष्ट होता है की डिजिटल युग ने पारंपरिक संगीत परंपराओं के समक्ष अवसरों और चुनौतियाँ—दोनों को प्रस्तुत किया है। सोशल मीडिया और डिजिटल प्लेटफॉर्मों ने जहाँ संगीत परंपराओं के प्रचार-प्रसार और संरक्षण को नई दिशा दी है, वहीं सांस्कृतिक प्रामाणिकता और बदलती रुचियों जैसी समस्याएँ भी उत्पन्न हुई हैं। सूफियाना मौसिकी और डोगरी लोक संगीत जम्मू-कश्मीर की सांस्कृतिक धरोहर हैं। डिजिटल युग ने अवसर दिए हैं, लेकिन संतुलित प्रयासों की जरूरत है। सरकारी, संस्थागत और सामुदायिक सहयोग से इन अमूल्य परंपराओं को भविष्य की पीढ़ियों तक सुरक्षित पहुंचाया जा सकता है।

अतः पारंपरिक संगीत के संरक्षण के लिए यह आवश्यक है कि डिजिटल तकनीकों का संतुलित और संवेदनशील उपयोग किया जाए, जिससे इन संगीत परंपराओं की मौलिकता और सांस्कृतिक पहचान सुरक्षित रह सके सकता है।

प्रस्तुत शोध के माध्यम से जम्मू-कश्मीर की दो महत्वपूर्ण संगीत परंपराओं—सूफियाना मौसिकी और डोगरी लोक संगीत—का तुलनात्मक अध्ययन किया गया। इस अध्ययन से यह स्पष्ट होता है कि दोनों संगीत शैलियाँ अपनी प्रकृति, संरचना और सामाजिक भूमिका में भिन्न होने के बावजूद क्षेत्रीय सांस्कृतिक पहचान को संरक्षित करने में समान रूप से महत्वपूर्ण हैं।

सूफियाना मौसिकी मुख्यतः आध्यात्मिकता, शास्त्रीय परंपरा और सूफी दर्शन से प्रभावित संगीत शैली है, जबकि डोगरी लोक संगीत सामाजिक, सांस्कृतिक और सामुदायिक जीवन से गहराई से जुड़ी हुई परंपरा का प्रतिनिधित्व करता है। यह मुख्यतः विवाह, त्योहारों तथा अन्य सामाजिक अवसरों पर प्रस्तुत किया जाता है।

अध्ययन का एक महत्वपूर्ण निष्कर्ष यह भी है कि डिजिटल प्लेटफॉर्मों ने पारंपरिक संगीत के प्रचार-प्रसार और संरक्षण के नए अवसर प्रदान किए हैं। यद्यपि इससे सांस्कृतिक आदान-प्रदान और लोकप्रियता में वृद्धि हुई है, फिर भी सांस्कृतिक मूल्यों और मौलिकता के क्षरण जैसी चुनौतियाँ भी सामने आई हैं।

दोनों संगीत परंपराओं के संरक्षण के लिए एक संतुलित दृष्टिकोण आवश्यक है, जिसमें डिजिटल तकनीक, सरकारी नीतियाँ, शैक्षिक प्रयास तथा सामुदायिक सहभागिता—सभी का समन्वित उपयोग किया जाए। इसी के माध्यम से इन अमूल्य सांस्कृतिक धरोहरों को भविष्य की पीढ़ियों के लिए सुरक्षित रखा जा सकता है।

संदर्भ सूची (References with Links)

1. Kaul, N. (2019). Sufiana Music of Kashmir. Cultural Heritage Publications.
Link: <https://www.culturalindia.net/indian-music/sufiana-music.html>
2. Sharma, R. (2021). भारतीय लोक संगीत की परंपराएँ. साहित्य प्रकाशन.
Link: <https://ignca.gov.in/divisionss/janapada-sampada/folk-and-tribal-art/>
3. UNESCO. (2022). Intangible Cultural Heritage Reports.
Link: <https://ich.unesco.org/en/home>
4. Spotify Cultural Music Report (2025).
Link: <https://newsroom.spotify.com/>
5. YouTube Music Analytics Report (2025).
Link: <https://www.youtube.com/intl/en-GB/about/press/>
6. Gupta, P. (2020). Digital Media and Folk Culture Preservation. Journal of Cultural Studies, 12(3), 45-59.
Link: <https://www.researchgate.net/>
7. Kalhana. Rajatarangini.
Link: <https://archive.org/details/rajatarangini>
8. Sopori Academy of Music and Performing Arts.
Link: <https://saampa.org/>
9. Ministry of Culture, Government of India.
Link: <https://www.indiaculture.gov.in/>
10. Jammu and Kashmir Academy of Art, Culture and Languages.
Link: <https://jkaacl.jk.gov.in/>